## <u>Taittirlya Upanishad</u> <u>Sanskrit Corrections – Observed till 31st July 2022</u>

(ignore those which are already incorporated in your book's version and date).

Kindly refer to your Guru for the differences in Swaram marking between various sources.

| Section, Paragraph<br>Reference  | As Printed  | To be read as or corrected as (Comments and analysis) |
|--|---|---|
| TA 5.5.1 Brighu Valli 2nd Para (2.1) full (Note in Tamil and Malyalam there is no error) | Para No. 1.1 repeated and the same para number as Para No. 2.1. | Corrected   |
| 4.14 – naaraayaNa suktam<br>Statement No. 1<br>Para No. 13.10                            | े ।<br>देहमापादतल मस्त <mark>कः</mark> ।<br>—                   | देहमापादतल मस्त <mark>गः</mark> ।<br>                 |
| 4.33 - trisuparNa mantraha<br>Statement No. 5<br>Para No. 38.1                           | दुःष्वप्नहन् दुर <mark>ुष्व</mark> ह ।                          | दुःष्वप्नहन् दुर <mark>ुष्</mark> ह ।<br>             |
| 4.39 - papa nivaara mantra<br>Statement No. 3<br>Para No. 59.1                           | मनु <mark>ष्य</mark> कृतस्यैनसो<br>                             | मनुष्य <mark>कृ</mark> तस्यैनसो<br>                   |
| 4.54 – jnaana saadhana<br>nirupanam<br>Line No. 2<br>Para No. 79.13                      | प्रजापतिः सम्वथ्स <mark>र</mark> इति                            | प्रजापतिः सम् <b>वथ्स</b> र इति                       |
| 4.55 – jnaana ya~jnam<br>Line No. 7<br>Para No. 80.1                                     | ध् <mark>या</mark> वध्द्रियते सा दीक्षा                         | <mark>द्य</mark> ावध्द्रियते सा दीक्षा                |

| 4.55 – jnaana ya~jnam<br>Line No. 23<br>Para No. 80.1           | चन्द्रम <mark>सौ</mark> र् महिमानौ        | चन <u>्द</u> ्रम <mark>स</mark> ोर् महिमानौ   |
|---|---|---|
| Tri Naachiketam<br>T.B.3.11.9.8<br>Line No. 1<br>Dasini No. 57  | तेज <mark>स्वी</mark> यशस्वी ब्रह्मवर्चसी | तेज <mark>स्वी</mark> यशस्वी ब्रह्मवर्चसी<br> |
| Tri Naachiketam<br>T.B.3.11.10.4<br>Line No. 6<br>Dasini No. 62 | स्वर्गं ँलोक-मे <mark>ति</mark> ।         | स्वर्गं ँलोक- <mark>मे</mark> ति ।            |
| "ञ्न" replaced with " <mark>२</mark>                            | wherever applicable                       |   |

## <u>Taittirlya Upanishat</u> <u>Sanskrit Corrections – Observed till 31<sup>st</sup> Mar 2020</u>

(ignore those which are already incorporated in your book's version and date).

Kindly refer to your Guru for the differences in Swaram marking between various sources.

| Section, Paragraph      | As Printed                              | To be read as or corrected as             |
|-------------------------|---|---|
| Reference               |   | (Comments and analysis)                   |
| TA 5.5.1 Sheeksha Valli |   |   |
| 2nd Vaakyam             | तासा <mark>म</mark> ुहस्मै ता चतुत्थी । | ता <mark>सा</mark> मुहस्मै तां चतुत्थीं । |
| 10th Dasini             |   | <u> </u>                                  |

| TA 5.11.3 Sheeksha Valli | नो इतरा <mark>णि</mark> ।                                   | नो इत <mark>रा</mark> णि ।                                   |
|--------------------------|---|--|
| 1st Vaakyam              |   |  |
| 21st Dasini              |   |  |
| TA 5.15.1 Bhrigu Valli   |   |  |
| 9th Vaakyam              | यत् प्रयन्त्यभि सम् विशन्ति ।                               | यत् प्र <mark>य</mark> न्त्यभि सम् विशन्ति ।                 |
| 35th Dasini              | _ ` `   | _ ` _ `  |
| TA 5.15.4 Bhrigu Valli   | <mark>'</mark>  |  |
| 4th Vaakyam              | मनः <mark>प्र</mark> यन्त्यभि सम्विशन्ति ।                  | मनः प्र <mark>य</mark> न्त्यभि सम्विशन्ति ।                  |
| 38th Dasini              | `   | `  |
| TA 5.15.5 Bhrigu Valli   |   |  |
| 4th Vaakyam              | विज्ञानं प्रयन्त्यभि-सम्विश                                 | विज्ञानं प्र <mark>य</mark> न्त्यभि-सम्ँविशन्तीति            |
| 39th Dasini              |   |  |
| cour Bacinii             | न्तीति  |  |
|                          | न्तात   |  |
| TA 5.15.6 Bhrigu Valli   |   |  |
| 4th Vaakyam              | आनन्दं <mark>प्र</mark> यन्त्यभि सम् <sup>*</sup> विशन्ति । | आनन्दं प्र <mark>य</mark> न्त्यभि सम् <sup>*</sup> विशन्ति । |
| 40th Dasini              | <u> </u>  | ` • - `  |
| TA 5.15.10 Bhrigu Valli  | -1  | •  |
|                          | क्षेम इ <mark>ति</mark> वाचि ।                              | क्षेम <mark>इ</mark> ति वाचि ।                               |
| 2nd Vaakyam              |   |  |
| Dasini No. 44b           |   |  |
| TA 5.15.10 Bhrigu Valli  | इमान् ँलो <mark>क</mark> न् कामान्नी                        | इमान् ँलो <mark>का</mark> न् कामान्नी                        |
| 9th Vaakyam,             | िञ्चान् ता <mark>र</mark> ्भान् स्नामान्ना                  | इमान् ला <mark>का</mark> न् कामान्ना                         |
| Dasini No. 44e           |   |  |
| TA 5.15.10 Bhrigu Valli  |   | <del></del>  |
| 3rd Vaakyam,             | अह७ २लोककृ-द <mark>ह</mark> ७                               | अह⊌ ३लोककृ-द <mark>ह</mark> ⊎                                |
| Dasini No. 44f           |   | <del>_</del>   |
| TA 6.1.1 Maha            |   |  |
| Naaraayanopanishad       | ँविश्वं पुरा <mark>णां</mark> तमसः परस्तात् ॥               | ँविश्वं पुरा <mark>णं</mark> तमसः परस्तात् ॥                 |
|                          |   | `  |

| Last Vaakyam,      |   |  |
|--------------------|---|--|
| Dasini No. 1       |   |  |
| TA 6.1.2 Maha      |   |  |
| Naaraayanopanishad | तद्ब्रह्म तदापः स प्रजाप <mark>तिः</mark> ।   | तद्ब्रह्म तदापः स प्रजा <mark>प</mark> तिः । |
| 4th Vaakyam        | \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \         | `  |
| Dasini No. 2       |   |  |
| TA 6.1.7 Maha      |   |  |
| Naaraayanopanishad | कात्यायनाय विद्यहे क <mark>न्या</mark> कुमारि | कात्यायनाय विद्महे क <mark>न्य</mark> कुमारि |
| 6th Vaakyam        | <u>-</u>                                      | <del>-</del> ~                               |
| Dasini No. 7       | धीमहि ।                                       | धीमहि ।                                      |
|                    | पानाल ।                                       | वानार ।                                      |
| TA 6.1.12 Maha     |   |  |
| Naaraayanopanishad | हिरण्यशृ <mark>ङं</mark> ँवरुणं प्रपद्य       | हिरण्यशृङ्कं वैरुणं प्रपद्य                  |
| 6th Vaakyam,       |   | _  |
| Dasini No. 12      |   |  |
| TA 6.4.1 Maha      |   |  |
| Naaraayanopanishad | <mark>भ</mark> -भुवस्सुव-श्चन्द्रमसे          | भू-भुवस्सुव-श्चन्द्रमसे                      |
| 4th Line           |   |  |
| Dasini No. 18      |   |  |
| TA 6.5.1 Maha      | ,   | ,  |
| Naaraayanopanishad | <mark>भ</mark> ुर्भुवस्सुवर् महरों ।          | भूभुवस्सुवर् महरों।                          |
| Last Line          |   |  |
| Dasini No. 19      |   |  |
| TA 6.1.13 Maha     |   |  |
| Naaraayanopanishad | गच्छे <mark>त्</mark> ब्रह्मसलोकतां ।         | गच्छे <mark>द्</mark> ब्रह्मसलोकतां ।        |
| 5th Vaakyam,       |   |  |
| Dasini No. 13      |   |  |
|                    |   |  |

| TA 6.10.1 Maha          |   |  |
|-------------------------|---|--|
| Naaraayanopanishad      | भूर्भुवस्सु <mark>व</mark> र्-ब्रह्मै-तदुपास्यै-        | भूर्भुवस्सु <mark>व</mark> र्-ब्रह्मै-तदुपास्यै-       |
| 1st Vaakyam,            |   |  |
| Dasini No. 24 (1)       | तत्तपः ।  | तत्तपः ।   |
| TA 6.12.3 Maha          | , I   | \                |
| Naaraayanopanishad      | यः प <mark>र सः</mark> महेश्वरः ।                       | यः प <mark>रः स</mark> महेश्वरः ।                      |
| Last Vaakyam,           |   | _ <del>_</del> _                                       |
| Dasini No. 28           |   |  |
| TA 6.14.1               | <u> </u>  |  |
| Mahanaaraynopanishad    | मण्ड <mark>ले</mark> ऽचिर् <mark>र्द</mark> ीप्यते तानि | मण्डलेऽ <mark>र</mark> चिर् <mark>दी</mark> प्यते तानि |
| 2 <sup>nd</sup> Line    | -   | · ` <b>-</b> -   |
| Dasini No. 31(1)        |   |  |
| TA 6.15.1 Maha          |   | <del>}</del>   |
| Naaraayanopanishad      | तेज ओजो बलं ँय <mark>श</mark> –श्रक्षुः                 | तेज ओजो बलं ँय <mark>श</mark> –श्रक्षुः                |
| 1st Line                |   |  |
| Dasini No. 32(1)        |   |  |
| TA 6.15.1 Maha          | <del></del>   | <del></del>  |
| Naaraayanopanishad      | क तथ् सत्यमन्न–ममृ <mark>त</mark> ो                     | क तथ् सत्यमन्न-ममृ <mark>त</mark> ि                    |
| 3rd Line                |   | · – – –  |
| Dasini No. 32(1)        |   |  |
| TA 6.22.1 Maha          | lament many and and                                     |  |
| Naaraayanopanishad      | उमापतये पशुपतये नमो न <mark>मः</mark> ।                 | उमापतये पशुपतये नमो न <mark>मः</mark> ।                |
| 1 <sup>st</sup> Vaakyam |   |  |
| Dasini No. 40(1)        |   |  |
| TA 6.38.1 Maha          |   |  |
| Naaraayanopanishad      | <mark>दु</mark> ष्वप्नहन् दुरुष्वह ।                    | द <mark>ुः</mark> ष्वप्नहन् दुरुष्वह ।                 |
| 5th Vaakyam             |   |  |
| Dasini No. 56           |   |  |

| TA 6.39.1 Maha<br>Naaraayanopanishad<br>5th Vaakyam<br>Dasini No. 57 | परा <mark>दु</mark> ष्वप्नियण् सुव ।  | परा <mark>दुः</mark> ष्वप्निय <i>्</i> सुव ।         |
|--|---|--|
| TA 6.48.1 Maha<br>Naaraayanopanishad<br>1st Vaakyam<br>Dasini No. 66 | अमुत्र भूयादध य <mark>ध्य</mark> मस्य<br>———————————————————————————————————— | अमुत्र भूयादध <mark>यद्</mark> यमस्य बृहस्पते<br>व्ह |
| TA 6.79.1 Maha<br>Naaraayanopanishad<br>16th Para<br>Dasini No. 100  | महस्वान् तपसो परि <mark>ष्</mark> टाद्,                                       | महस्वान् तपसो परि <mark>ष्</mark> यद्,               |
| TA 1.2.3 (Aruna Prasnam)<br>7th Vaakyam<br>6th Dasini                | यत्रै <mark>त</mark> –दुपदृश्यते ।  | यत्रै <mark>त</mark> –दुपदृश्यते ।                   |
| TA 1.3.4 (Aruna Prasnam) 5th Vaakyam 11th Dasini                     | वर्.षाभिर् <mark>र्द</mark> दता ं सह ।  | वर्.षाभिर् <mark>द</mark> दता <u>७</u> सह ।          |
| TA 1.5.1 (Aruna Prasnam)<br>4th Vaakyam<br>15th Dasini               | अग्निजि <mark>व्हा</mark> असश्चत ।  | अग्निजि <mark>ह्वा</mark> असश्चत ।                   |
| TA 1.7.4 (Aruna Prasnam)<br>8th Vaakyam<br>23rd Dasini               | सप्तर्त्वि <mark>र्जः</mark> सूर्या इत्याचार्याः ।                            | सप्तर्त्वि <mark>जः</mark> सूर्या इत्याचार्याः ।     |
| TA 1.7.6 (Aruna Prasnam)<br>9th ( last) Vaakyam<br>25th Dasini       | सूर्य आत्मा जगतस्त <mark>स्तु</mark> षश्चेति ।                                | सूर्य आत्मा जगतस्त <mark>स्थ</mark> ुषश्चेति ।       |

| <mark>त्र्</mark> षष्टभ्ना-द्रोदसी विष्णवेते ।<br>  | <mark>व</mark> ्यष्टभ्ना-द्रोदसी विष्णवेते ।   |
|---|--|
|   |  |
| ਲ <mark>ਾੜੀ</mark> ਕਰਤੇ ਰਵੀਰੰਗ ਰਿਨੀਸ਼ਨ।             | यथ <mark>र्त्व</mark> –वाग्ने –रिचर्वर्ण विशेषाः ।   |
| 14 <mark>79</mark> – 9144 – 11990 1921 9151         | 44 <mark>79</mark> - 9179 - 11499 1931915 1  |
|   |  |
| वद्युष्ठधमवाह मृत्युम <mark>श्च</mark> ामात ।       | विद्युद्रधमेवाहं मृत्युमैं <mark>च्छ</mark> मिति ।   |
|   |  |
| tal <mark>:</mark> स्वा <mark>स्त</mark> रस्तु नः । | द <mark>ैवीं</mark> स्वस्ति <mark>र</mark> स्तु नः ।   |
|   |  |
| अदुष्धानि वरुणस्य व्रतानि ।                         | अ <mark>द</mark> ब्धानि वरुणस्य व्रतानि ।  |
|   |  |
| ामजि <mark>व्हा</mark> असश्चत ।                     | तमजि <mark>ह्वा</mark> असश्चत ।  |
| II  | II B   |
| गम्राश्चा– <mark>स्था</mark> म्ररथाः ।              | ताम्राश्वा– <mark>स्ता</mark> म्ररथाः ।  |
|   |  |
| ग्रसि <mark>ष्टो</mark> रौहिणो मीमा⊍्सां चक्रे │    | ।<br>वासि <mark>ष्ठो</mark> रौहिणो मीमां स्सां चक्रे ।   |
| ` -   |  |
|   |  |
|   | थर्त्वं - वाग्ने - रिचर्वर्ण विशेषाः। बिद्युद्धभेवाहं मृत्युमैश्चमिति । वीः स्वस्तिरस्तु नः । पद्धानि वरुणस्य व्रतानि । पित्र असश्चत । पामिश्चा असश्चत । पामिश्चा गैहिणो मीमा एसां चक्रे |

| TA 1.13.3 (Aruna Prasnam) |  |  |
|---------------------------|--|--|
| 1st & 5th Vaakyam         | परा मा <mark>त्ती</mark> ण्डमास्यत् ।        | परा मा <mark>र्</mark> ताण्डमास्यत् ।          |
| 63rd Dasini               | ·  | <mark>-</mark> -                               |
| Correction in 2 places    |  |  |
| TA 1.14.4 (Aruna Prasnam) | 1 1  | ·  |
| 8th Vaakyam               | स सर्वेषां भूतानां प्राणै                    | सर्वेषां भूतानां प्राणै                        |
| 67th Dasini               | <u> </u>                                     |  |
| TA 4 40 4 (A D )          |  | ('sa" deleted)                                 |
| TA 1.18.1 (Aruna Prasnam) | प <mark>न्ति</mark> राधस उदग्दिश्यस्य स्थाने | प <mark>ङ्क्ति</mark> राधस उदग्दिश्यस्य स्थाने |
| 8th Vaakyam               | पाना रायस उदग्दियस्य स्थान                   |  |
| 72nd Dasini               |  |  |
| TA 1.21.1 (Aruna Prasnam) | पुत्रव <mark>त्वा</mark> यं में सुत ।        | पुत्रव <mark>त्त्वा</mark> यं में स्तृत ।      |
| 8th Vaakyam               | <u> पुत्रव<mark>त्व</mark>ाय म स</u> ुत ।    | <u>पुत्रव<mark>त्त्व</mark>ा</u> य म सुत ।     |
| 75th Dasini               |  |  |
| TA 1.21.2 (Aruna Prasnam) |  | 1 h  |
| 2nd Vaakyam               | पुत्रव <mark>त्वा</mark> य में सुत ।         | पुत्रव <mark>त्त्वा</mark> य मे सुत ।          |
| 76th Dasini               |  |  |
| TA 1.21.2 (Aruna Prasnam) |  |  |
| 5th Vaakyam               | अपाघ्रामप चाव <mark>र्त</mark> ि ।           | अपाघ्रामप चाव <mark>तिं</mark> ।               |
| 76th Dasini               |  |  |
| TA 1.22.3(Aruna Prasnam)  |  |  |
| 1st Vaakyam               | आपो वै वायोरा <mark>या</mark> तनं ।          | आपो वै वायोरा <mark>य</mark> तनं ।             |
| 80th Dasini               |  | <del>-</del>                                   |
| TA 1.22.7(Aruna Prasnam)  |  | <u> </u>                                       |
| 2nd Vaakyam               | सम्वथ्सरो वा अपामा <mark>य</mark> तनं ।      | सम्वथ्सरो वा अपामाय <mark>त</mark> नं ।        |
| 84th Dasini               | - `  | - `  |
| TA 1.22.7(Aruna Prasnam)  | <u> </u>                                     | 1 1  |
| 4th Vaakyam               | यः सम् <mark>व</mark> ध्सर-स्यायतनं वैद ।    | यः सम्वथ्सर-स्यायतनं वैद ।                     |
| 84th Dasini               |  |  |
|                           | •  | •  |

| TA 1.22.9(Aruna Prasnam)<br>6th Vaakyam<br>86th Dasini  | सा <mark>प्र</mark> णीतेऽयमुफ्सु ह्ययञ्चीयते ।       | सा <mark>प्प्र</mark> णीतेऽयम्पस्य ह्ययञ्चीयते ।             |
|---|--|--|
| TA 1.22.10(Aruna Prasnam)<br>8th Vaakyam<br>87th Dasini | सावि <mark>त्र</mark> मग्निञ्चिन्वानः ।              | सावि <mark>त्र</mark> मग्निञ्चिन्वानः ।                      |
| TA 1.22.12(Aruna Prasnam)<br>3rd Vaakyam<br>89th Dasini | इममारुण-केतुक-मुग्निञ्चि <mark>वा</mark> न इति<br>।  | ड्ममारुण-केतुक-मुग्निञ्चि <mark>न्वा</mark> न इति ।          |
| TA 1.23.4(Aruna Prasnam)<br>3rd Vaakyam<br>93rd Dasini  | तत् <mark>पु</mark> रुषस्य पुरुषत्वं ।               | तत्पुरुषस्य पुरुषत्वं ।                                      |
| TA 1.23.6(Aruna Prasnam)<br>9th Vaakyam<br>95th Dasini  | ततो वै <mark>पू</mark> षोदतिष्ठत् ।                  | ततो वै <mark>पू</mark> षोदतिष्ठत् ।<br>—                     |
| TA 1.23.8(Aruna Prasnam)<br>5th Vaakyam<br>97th Dasini  | ।  तस्मादिद्ध सर्वं ब्रह्म स्वयंभ्वि <mark>ति</mark> | । । । । तस्मादिद्धः सर्वं ब्रह्म स्वयंभ्वि <mark>ति</mark> । |
|   | 1  |  |
| TA 1.24.4(Aruna Prasnam)<br>3rd Vaakyam , 102nd Dasini  | दिक्षूप <mark>द</mark> धाति ।                        | दिक्षूपदधाति ।   |
| TA 1.25.2(Aruna Prasnam)<br>2nd Vaakyam<br>104th Dasini | कूर्म <mark>म</mark> ुपदधाति ।                       | कूर्ममु <mark>प</mark> दधाति ।                               |

| TA 1.25.2(Aruna Prasnam)  | 1 (1.1)22                                   | 1 (1.1)                                    |
|---------------------------|---|--|
| 9th Vaakyam               | वाय्व <mark>श्चा</mark> रिमपतयः{11}" ।      | वाय्व <mark>श्वा</mark> रिमपतयः{11}" ।     |
| 104th Dasini              |   |  |
| TA 1.25.3(Aruna Prasnam)  |   |  |
| 4th Vaakyam               | पा <mark>न्को</mark> ऽग्निः ।               | पा <mark>ङ्क्तो</mark> ऽग्निः ।            |
| 105th Dasini              | _   |  |
| TA 1.25.3(Aruna Prasnam)  |   |  |
| 15th Vaakyam,105th Dasini | य <u>ए</u> तम <mark>ुग्ञिन्चि</mark> नुते । | य एतम्पिञ्चिनुते ।                         |
| TA 1.26.7(Aruna Prasnam)  |   |  |
| 13th Vaakyam              | य एतमग्नि <mark>न्चि</mark> नुते ।          | य एतमग्नि <mark>ञ्च</mark> नुते ।          |
| 112th Dasini              |   | <u> </u>                                   |
| TA 1.27.3(Aruna Prasnam)  |   |  |
| 2nd Vaakyam               | तस्या 🤄 हिरण्म <mark>यः कोशः ।</mark>       | तस्यां ्रं हिरण <mark>म</mark> यः कोशः।    |
| 115th Dasini              | ` <u> </u>                                  | ` <u> </u>                                 |
| TA 1.29.1(Aruna Prasnam)  | गवा <mark>ङ्</mark> कृणोत्यर्वतां ।         | <u> </u>                                   |
| 9th Vaakyam               | गवा <mark>ङ्</mark> कृणात्यवता ।            | ग <mark>वा</mark> ङ्कृणोत्यर्वतां ।        |
| 120th Dasini              |   | `-   |
| TA 1.31.2(Aruna Prasnam)  |   |  |
| 5th Vaakyam               | <mark>शतद्वारगमन्ता ।</mark>                | शत <mark>्हाट्टा</mark> रगमन्ता ।          |
| 123rd Dasini              |   | _ <u> </u>                                 |
| TA 1.31.3(Aruna Prasnam)  |   |  |
| 1st Vaakyam               | सर्वभूताधिपतये नमे इति ।                    | सर्वभूताधिपतये नम इति ।                    |
| 124th Dasini              |   |  |
| TA 1.31.6(Aruna Prasnam)  | ा ॥ ॥ ।<br>नमो वयं वैश्ववणाय कुर्महे ।      | नमो वयं वैश्र <mark>व</mark> णाय कुर्महे । |
| 5th Vaakyam               | नमा वय व <mark>श्र</mark> वणाय कुमह ।       | नमा वय वश्र <mark>व</mark> णाय कुमह ।      |
| 127th Dasini              |   |  |
|                           | 1   | 1  |

| TB 3.11.8.3 (Tri Naachiketam)<br>4th Vaakyam<br>44th Dasini | किं <mark>त्रि</mark> तीया-मिति ।             | किं <mark>तृ</mark> तीया-मिति                     |
|---|---|---|
| TB 3.11.8.4 (Tri Naachiketam)<br>5th Vaakyam<br>45th Dasini | किं त्रितीया-मिति ।                           | किं तृतीया-मिति                                   |
| TB 3.11.9.6 (Tri Naachiketam)<br>8th Vaakyam<br>55th Dasini | अ <mark>थ</mark> हैन-मिन्द्रो ज्यैष्ठ्यकामः । | ।<br>अ <mark>थ</mark> हैन–मिन्द्रो ज्यैष्ठ्यकामः। |
| TB 3.12.2.2 (Tri Naachiketam)<br>15th Vaakyam<br>3rd Dasini | य उ च <mark>नै</mark> देवं ँवेद ।             | य उ <mark>चै</mark> नदेवं ँवेद ।                  |

<u>Taittirlya Upanishat - Sanskrit Book Corrections –Observed till 28<sup>th</sup> February 2019</u>
(released on 30<sup>th</sup> September 2019)

| Section, Paragraph<br>Reference          | As Printed  | To be read as or corrected as  |
|--|---|--|
| Section 1.11 Para 11.3<br>Sheeksha Valli | नो इतरा <mark>णि</mark> ।<br>(Last aksharam cannot be<br>anudAttam)                                     | नो इत <mark>रा</mark> णि ।   |
| Section 3.1 Para 1.1<br>Bhrigu Valli     | यत् <mark>प्र</mark> यन्त्यभि सम् विशन्ति<br>(yat is udAttam and therefore<br>'pra' marked in swaritam) | यत् प्र <mark>य</mark> न्त्यभि सम्ँविशन्ति<br>('pra' is treated udAttam and 'ya'<br>swaritam; <b>more appropriate</b> as per |

|                                       |  | Grantha and South Based sources)   |
|---------------------------------------|--|--|
| Section 3.1 Para 4.1<br>Ananda Valli  | मनः <mark>प्र</mark> यन्त्यभि–सम् <sup>र</sup> विश   | मनः प्र <mark>य</mark> न्त्यभि–सम्ँविशन्तीति   |
|                                       | न्तीति   | (pra after anudAttam naH is not appropriate; ya is more accurate)  |
| Section 3.1 Para 5.1<br>Ananda Valli  | विज्ञानं प्रयन्त्यभि-सम्ँविश   | विज्ञानं <mark>प्र</mark> यन्त्यभि–सम्ँविशन्तीति   |
|                                       | न्तीति   | (similar to above)   |
| Section 3.1 Para 6.1<br>Ananda Valli  | आनन्दं <mark>प्र</mark> यन्त्यभि–सम् <sup>विञ्</sup><br>—।<br>न्तीति<br>(ndam is udAttam and<br>therefore 'pra' marked in<br>swaritam) | आनन्दं प्र <mark>य</mark> न्त्यभि—सम्विशन्तीति<br>('pra' is treated udAttam and 'ya'<br>swaritam; <b>more appropriate</b> as per<br>Grantha and South Based sources) |
| Section 3.4 Para 10.2<br>Ananda Valli | क्षेम इ <mark>ति</mark> वाचि   | क्षेम <mark>इ</mark> ति वाचि   |
|                                       | Normally 'ti; in iti is swaritam. No support swaram for either kShE or ma given in books. Since no Pada Paatam for Aranyam.            | (as per Grantha source correct as per your Guru's teachings)   |
| Section 3.4 Para 10.4<br>Ananda Valli | इमान् ँल <mark>ोकन्</mark> कामान्नी  | इमान् ँल <mark>ोकान्</mark> कामान्नी   |

|   |   | (coding error /proof reading missed)            |
|---|---|---|
| Section 4.1 Para 1.5<br>Maha Naaraayanopanishad | विश्वं पुरा <mark>णां</mark> तमसः<br>।<br>परस्तात् ॥ <b>1.5</b> | विश्वं पुरा <mark>णं</mark> तमसः परस्तात् ॥ 1.5 |

Taittirlya Upanishat - Sanskrit Book Corrections - Observed till 31st October 2018

| Section, Paragraph  | As Printed  | To be read as or corrected as   |
|---|---|---|
| Reference Section 1.5 Para 5.1 Sheeksha Valli             | ता <mark>सामु</mark> हस्मै तां चतुर्त्थी                      | ता <mark>सामु</mark> हस्मै तां चतुर्त्थी  |
| Section 4.33 Para 40.2<br>Mahanaarayonopanisad            | मोमः पवित्र- <mark>म</mark> त्येति रेभन्न्                    | सोमः पवित्र- <mark>मत</mark> ्येति रेभन्न्  |
| Section 4.53 ref (78.3)<br>Mahanaarayonopanisad           | ब्रह्मचारिण-स्तस्माद्<br>। – –<br>दमे रमन्ते,                 | ब्रह्मचारिण-स्तस्माद् दमे रमन्ते,   |
| Section 4.55 Para 2 (no ref. number) Mahanaarayonopanisad | ा यदश्र्नाति <mark>तद्दधवि</mark> र्-<br>। —<br>यत्पिबति<br>— | यदश्र्नाति <mark>तदधविर्</mark> — यत्पिबति extra ' <mark>d'</mark> not required. (paata bhedham observed follow the |

|  | swaram as per your Guru) |
|--|--------------------------|
|  |                          |

# Taittirlya Upanishat - Sanskrit Book Corrections - Observed till 1st April 2018

| Section, Paragraph<br>Reference          | As Printed   | To be read as or corrected as  |
|--|--|--|
| Section 1.3 Para 3.4<br>Sheeksha Valli   | वा <mark>क</mark> ्-सन्धिः   | वा <mark>ख</mark> -सन्धिः  |
| Section 1.5 Para 5.1<br>Sheeksha Valli   | त <mark>त्</mark> ब्रह्म   | त <mark>द्</mark> ब्रह्म   |
| Section 1.7 Para 7.1<br>Sheeksha Valli   | एतदधिवि <mark>धाय ऋषि</mark> रवोचत्<br>(This is given without sandhi of<br>Ru) If rendered without Sandhi<br>a pause is given. | एतदधिविधाय <mark>र्.षि</mark> रवोचत्<br>— ा<br>(ऋषिरवोचत्)<br>(given with Sandhi – rendered differently<br>by some schools.) |
| Section 1.11 Para 11.1<br>Sheeksha Valli | प्रजातन्तुं मा व्यवच् <mark>छेत्स्</mark> रीः  | प्रजातन्तुं मा व्यवच् <mark>छेथ्सीः</mark>   |

| Section 1.11 Para 11.3<br>Sheeksha Valli         | कर्मविचिकित्सा वा<br>वृत्त विचिकित्सा वा स्यात्  | कर्मविचिकि <mark>थ्सा</mark> वा<br>वृत्त विचिकि <mark>थ्सा</mark> वा स्यात्  |
|--|--|--|
| Section 2.1 Para 1.1<br>Ananda Valli             | यो <mark>वे</mark> द निहितं गुहायां<br>—   | यो <mark>वे</mark> द निहितं गुहायां<br>—   |
| Section 2.2 Para 6.1<br>Ananda Valli             | त <mark>त्स</mark> ृष्ट्वा ।<br>।<br>तत्सत्य–मित्या चक्षते<br>—  | त <mark>थ्सृष्</mark> ट्वा ।<br>तथ्सत्य-मित्या चक्षते<br>—   |
| Section 4.1 Para 1.11<br>Maha Naaraayanopanishad | विदु— <mark>रमृ</mark> तास्ते भवन्ति<br>(This is in our Source book.<br>Refer to Paata Bhedam given in<br>the next column) | विद्र — <mark>रमृता</mark> स्ते भवन्ति<br>(This was originally given and a<br>correction was issued. This is a Paata<br>Bhedam. Kindly follow your Guru) |
| Section 4.1 Para 1.15<br>Maha Naaraayanopanishad | सवितुः पित <mark>ा सत्</mark>  | सवितुः पिता <mark>ऽ</mark> सत्<br>— —  |
| Section 4.1 Para 1.20<br>Maha Naaraayanopanishad | जातवेदो ऽपघ्न <mark>न्निऋ</mark> तिं मम  | जातवेदो ऽपघ्नन्नि <mark>र्ऋतिं</mark> मम   |
| Section 4.4 Para 1.38<br>Maha Naaraayanopanishad | उधृत <mark>ासि</mark> वराहेण<br>—  | उधृत <mark>ाऽसि</mark> वराहेण<br>—   |

| Section 4.6 Para 1.60                                      | गच्छे <mark>त्</mark> ब्रह्म–सलोकतां         | गच्छे <mark>द्</mark> ब्रह्म-सलोकतां                            |
|--|--|---|
| Maha Naaraayanopanishad                                    | —  | —   |
| Section 4.9 Para 7.1<br>Maha Naaraayanopanishad            | पाहि गी <mark>भिर्श</mark> ्चतसृभिर्         | पाहि गीभिश्चतसृभिर्   |
| Section 4.16 Para 15.1                                     | सत्यमन्न-ममृ <mark>तो</mark> जीवो            | सत्यमन्न-ममृ <mark>तो</mark> जीवो                               |
| Maha Naaraayanopanishad                                    |  |   |
| Section 4.55 first and second para Maha Naaraayanopanishad | coding incorrect.<br>ब्ह dh should follow d. | Corrections in SraddhA, taddhavir and yaddhriyatE               |
| Section 4.55 Para 80.1                                     | ब्राह्म <mark>णो</mark> विद्या–नभिजयति       | ब्राह्म <mark>णो</mark> विद्या–नभिजयति                          |
| Maha Naaraayanopanishad                                    | — — —  | — — —   |
| TS 3.11.8.2 (or old ref 3.11.8.43) Tri naachiketam         | स य <mark>दि</mark> त्वा पृच्छेत्            | स य <mark>दि</mark> त्वा पृच्छेत्                               |
| TS 3.11.8.7(3.11.8.47)                                     | प्रजाकाम–स्तपो <mark>त</mark> प्यत           | प्रजाकाम–स्तपो <mark>ऽत</mark> प्यत                             |
| Tri naachiketam  | – –  | – –   |
| TS 3.11.9.1 (3.11.9.50)                                    | स एनं कामेन <mark>व्यऋ</mark> द्धः           | स एनं कामेन <mark>व्य</mark> ृद्धः                              |
| Tri naachiketam  | — —  | — —   |
| Nasal Corrections  | Some missed nasal symbols added              | स <mark>म्व</mark> थ्सरो, ह्येवायं <mark>ल</mark> ब्ध्वाऽऽनन्दी |

| Improved Sound<br>Representation | A dot after . To represent svarabhakti                       | (examples) <mark>वर</mark> .षाः, <u>ए</u> षोऽन् <mark>तर्.</mark> हृदय             |
|----------------------------------|--|--|
| Pause or extension of 'n'        | A dot after न्. to represent pause or extension in few place | (examples)विद्वा <mark>न्.</mark> यत्र विश्व,<br>घृतेनास्मि <mark>न्.</mark> यज्ञे |
| Extension of 'n'                 | 'n' ending after short vowel has been doubled in few places. | (examples)तेषु वर्त्तरह्म, परमे व्योम <mark>ह्म</mark>                             |

Taittirlya upanishat Sanskrit Book Corrections -Observed till 1st October 2017

| Section, Paragraph<br>Reference                                     | As Printed   | To be read as or corrected as                                 |
|---|--|---|
| 4.55 Gyna Yajgna<br>3 <sup>rd</sup> line<br>Maha Naaraayanopanishad | दक्षिणा–वा <mark>ग्धो</mark> ता <b>प्राण</b><br>। – उद्गता | दक्षिणा-वा <mark>ग्घो</mark> ता <b>प्राण उद्गाता</b><br>— — — |
| 5. Aruna Prasnam<br>Para 27 statement 2                             | वि <mark>द्यथ्</mark> सूर्ये समाहिता ।                     | वि <mark>द्युथ्</mark> सूर्ये समाहिता ।<br>—                  |

| Para 55 3 <sup>rd</sup> statement                  | रथे युक्त्वाऽधि ति <mark>ष्टति</mark> | रथे युक्त्वाऽधि ति <mark>ष्ठति</mark>                             |
|--|---------------------------------------|---|
| Aruna Prasnam                                      | —                                     | —   |
| Para 66 4 <sup>th</sup> statement<br>Aruna Prasnam | **प्राणै-रप प्रसृपत<br>—              | <mark>मा मम</mark> प्राणे—स्प (deleted during editing please add) |

# <u>Taittirlya Upanishat - Sanskrit Book Corrections –Observed till 1st January 2016</u> (ignore those which are already incorporated in your book's version and date)

| \ightarrow \landscape{1911010}                  | chose willen are already incorporated in y | our book o voroion and dato,                    |
|---|--|---|
| Section, Paragraph                              | As Printed                                 | To be read as or corrected as                   |
| Reference                                       |  |   |
| 1.3 third statement<br>Sheeksha Valli           | उपनिषदं व्याख्यास्यामः ।<br>—              | उपनिषदं व्याख्यास्यामः ।<br>—                   |
| 1.5 Para 5.2 second statement                   | आदित्येन वाव सर्वे लोका                    | आदित्येन वाव सर्वे लोका म <mark>ही</mark> यन्ते |
| Sheeksha Valli                                  | म <mark>ही</mark> यन्ते ।                  | l (only Swaritam)                               |
| Bruguvalli Section 3.2;                         |  |   |
| para 2.1,3.1,4.1,5.1,6.1                        | खल्विमानि <mark>भ</mark> ुतानि जायन्ते     | खल्विमानि <mark>भ</mark> ूतानि जायन्ते          |
|   |  | (5 places)                                      |
| Section 4.1 para 1.2<br>Maha Naaraayanopanishad | तदेव <mark>भ</mark> ुतं तदु भव्यमा इदं     | तदेव <mark>भू</mark> तं तदु भव्यमा इदं          |

| 4.1 Para 1.5<br>Maha Naaraayanopanishad             | अतः परं नान्य-दणीयस <mark>्थ</mark> िह                | अतः परं नान्य-दणीयस <mark>्</mark> हि                                |
|---|---|--|
| 4.1 Para 1.11<br>Maha Naaraayanopanishad            | ग ग ग ग<br>य एनं विदु- <mark>रमृता</mark> स्ते भवन्ति | (no lower swaram for gm)  य एनं विदु- <mark>रम</mark> ृतास्ते भवन्ति |
| 4.2 Heading<br>Maha Naaraayanopanishad              | गा <mark>या</mark> त्री मन्त्राः                      | गा <mark>यत्री</mark> मन्त्राः                                       |
| 4.3 1.34 last word<br>Maha Naaraayanopanishad       | दुस्स्वप्न ना <mark>शि</mark> नी                      | दुस्स्वप्न ना <mark>श</mark> नी<br>—                                 |
| 4.6 Para 1.67<br>Maha Naaraayanopanishad            | योऽ <mark>हम</mark> स्मि ब्रह्माहमस्मि ।              | गेऽ <mark>हम</mark> स्मि ब्रह्माहमस्मि ।<br>— —                      |
| 4.11 Para 10.1<br>Maha Naaraayanopanishad           | भूर्भुवस्सु <mark>व</mark> -ब्रह्मैतदुपास्यै तत्तपः   | भूर्भुवस्सु <mark>वर्</mark> -ब्रह्मै-तदुपास्यै-तत्तपः               |
| 4.32 Para 37.1 last line<br>Maha Naaraayanopanishad | रसोऽमृतं ब्र <mark>ह्म</mark> भूर्भुवस्सुवरों ॥       | रसोऽमृतं ब्र <mark>ह्म</mark> भूर्भुवस्सुवरों ॥                      |
| 4.44 Para 69.3<br>Maha Naaraayanopanishad           | <mark>अपा</mark> ना <mark>य</mark> स्वाहा ।           | अपाना <mark>य</mark> स्वाहा ।  |
|   |   | (lower swarams missing)  |

| 4.54 Para 79.19<br>Maha Naaraayanopanishad              | जोदास् त्वमस्य <mark>ग्ने-</mark> रसि वर्चोदा | जोदास् त्वमस्य <mark>ग्नि</mark> -रिस वर्चोदा<br>— —                    |
|---|---|---|
| Chapter 5 para 2<br>statement 6 and 10<br>Aruna Prasnam | पुत्रव <mark>त्याय</mark> मे सुत ।            | पुत्रव <mark>त्व</mark> ाय मे सुत ।                                     |
| Chapter 5 Para 6<br>Aruna Prasnam                       | पटरो विक्लि <mark>द</mark> ः पिङ्गः ।।<br>–   | पटरो विक्लि <mark>धः</mark> पिङ्गः ।<br>—                               |
| Para 11<br>Aruna Prasnam                                | यावै प्रजा भ्र <mark>⊎</mark> २यन्ते ।।       | यावै प्रजा भ्र <mark>च</mark> श्यन्ते ।                                 |
|   |   | (swaritam for (gg)  |
| Para 11<br>Aruna Prasnam                                | संवँथ्सराता भ्र <mark>⊌</mark> श्यन्ते ।      | संवँथ्सराता भ्र <mark>ू</mark> भ्यन्ते ।                                |
|   |   | (swaritam for (gg)  |
| Para 14 second<br>statement<br>Aruna Prasnam            | म <mark>नुनामुदकं गृहे ।</mark>               | म <mark>नूनामुदकं गृहे ।</mark><br>———————————————————————————————————— |
| Para 16 line 1<br>Aruna Prasnam                         | धनु <mark>ज्या</mark> -मछिनथ्स्वयं ।<br>      | धनु <mark>र्ज्या</mark> -मछिनथ्स्वयं ।<br>-                             |
| Para 20 last line<br>Aruna Prasnam                      | अर्पि <mark>ता</mark> स्सप्तसाकं ॥<br>———     | अ <mark>र्पि</mark> ता स्सप्तसाकं ॥<br>— —                              |

| Para 24 second last line<br>Aruna Prasnam             | इन्द्र ते शत <mark>्थ्</mark> शतं भूमीः ।             | इन्द्र ते शत <mark>्थ</mark> शतं भूमीः ।  |
|---|---|---|
| Para 28 5 <sup>th</sup> statement<br>Aruna Prasnam    | एको य <mark>ब्द्रा</mark> – <mark>र</mark> य द्देवः । | एको य <mark>द्धा</mark> -रय द्देवः ।      |
| Para 30 Second<br>Statement<br>Aruna Prasnam          | पा <mark>प</mark> स्सयँन्ति सर्वदा ।<br>              | पा <mark>पा</mark> स्सयँन्ति सर्वदा ।<br> |
| Para 34<br>4 <sup>th</sup> statement<br>Aruna Prasnam | प <mark>न्ति</mark> राधाश्च सप्तमः ।                  | प <mark>ुङ्कि</mark> राधाश्च सप्तमः ।     |
| Para 41 7 <sup>th</sup> statement<br>Aruna Prasnam    | पुत्रो बृहस्प <mark>ती</mark> रुद्रः ।                | पुत्रो बृहस्पती रुद्रः ।                  |
| Para 56 second<br>statement<br>Aruna Prasnam          | उद्धमा– <mark>ऽऽ</mark> धम सन्धम<br>—                 | उद्धमा <mark>–ध</mark> म सन्धम ।<br>–     |
| Para 74 10 <sup>th</sup> statement<br>Aruna Prasnam   | नक्षत्रा <mark>णि</mark> स्वलोके ।<br>—               | नक्षत्रा <mark>णि</mark> स्वलोके ।        |
| Para 75 and 76<br>Aruna Prasnam                       | पुत्रव <mark>त्याय</mark> मे सुत ।                    | पुत्रव <mark>त्व</mark> ाय मे सुत ।       |
| Para 80 third statement from end                      | योऽमुष्य-तपत आयतनं वेँद ।                             | योऽमुष्य-तपत आयतनं वेँद ।                 |

| Aruna Prasnam  |   |  |
|--|---|--|
| Para 85 third statement from end                         | तेऽमुष्मिन्–नादित्ये समा <mark>भृ</mark> ताः  | तेऽमुष्मिन्–नादित्ये समा <mark>भ</mark> ृताः   |
| Aruna Prasnam  |   | <b>-</b>   |
| Para 85 second<br>statement from end<br>Aruna Prasnam    | जानुद्धनी- <mark>म</mark> ुत्तर-वेदीङ्घात्वा ।  | जानुदघ्नी— <mark>म</mark> ुत्तर—वेदीङ्खात्वा ।<br>———————————————————————————————————— |
| Para 86 second<br>statement from end<br>Aruna Prasnam    | अ <mark>ग्नि</mark> होत्रे दर्शपूर्ण-मासयोः ।<br>———————————————————————————————————— | अ <mark>ग्नि</mark> होत्रे दर्शपूर्ण-मासयोः ।  |
| Para 89 5 <sup>th</sup> statement from end Aruna Prasnam | ग <mark>ुउने</mark> र्मिथूया वेद ।  | ग <mark>ुरुने</mark> र्मिथूया वेद ।  |
| Para 94 second<br>statement from end<br>Aruna Prasnam    | अथारुणः केतुः पश्चादु <mark>प</mark> दधात् ।<br>— — — — —                             | अथारुणः केतुः पश्चादु <mark>पा</mark> दधात् ।  |
| Para 97 5 <sup>th</sup> statement from end Aruna Prasnam | सर्व 🗸 <mark>शि</mark> थिल-मिवा धुव<br>—— —   | सर्व ् रिश <mark>थि</mark> ल-मिवा धुव<br>—— ——————————————————————————————————         |
| Para 100 fourth statement Aruna Prasnam                  | तेज ए <mark>ऽ</mark> वास्य दक्षिणतो दधाति<br>—  | तेज एवा <mark>ऽ</mark> स्य दक्षिणतो दधाति<br>—   |

| Para 108 second last statement Aruna Prasnam           | उत्तर वेद्या <mark>च्</mark> ह्यग्निश्चीयते ।<br>—— – | उत्तर वेद्या <mark>७</mark> ह्यग्निश्चीयते ।<br> |
|--|---|--|
| Para 115<br>7 <sup>th</sup> statement<br>Aruna Prasnam | राज्ञ स्सोमस्य तृप्तासः ।                             | राज्ञ <mark>सो</mark> मस्य तृप्तासः ।            |
| Para 132 first statement<br>Aruna Prasnam              | महानाम्नीभि–रुदक्र्                                   | महानाम्नीभि-रुदक <i>्</i><br>■                   |
|  | <mark>स</mark> ⊌ स्पर्श्य<br>—                        | स <mark>ुष्र</mark> स्पर्श्य                     |